नवोदय टाइम्स

निःशुल्क फाउंडेशन राष्ट्रीय ई-कोर्स शुरू

श्यामपुर, 15 अप्रैल (नवोदय टाइम्स): एंटीमाइक्रोबियल रेजिस्टेंस (एएमआर) के बढ़ते वैश्विक खतरे से निपटने की दिशा मे एक महत्वपूर्ण कदम उठाते एम्स ने सभी स्वास्थ्य कर्मियों और जनता के लिए एकीकृत एंटीमाइक्रोबियल स्टीवर्डशिप प्रथाओं पर एक निःशुल्क फाउंडेशन राष्ट्रीय ई-कोर्स शुरू किया है।

संस्थान की कार्यकारी निदेशक प्रो. मीनू सिंह ने एमडीआर, एक्स डीआर और पीडीआर जैसे रोगजनक एएमआर के बोझ से निपटने के लिए समन्वित और साक्ष्य-आधारित दृष्टिकोणों की तत्काल आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने बेडसाइड डायग्नोस्टिक्स, संक्रमण की रोकथाम और एंटीमाइक्रोबियल प्रथाओं मे मौजूद गंभीर कमियों की ओर भी ध्यान दिलाया। कहा कि हमें केवल एंटीमाइक्रोबियल दवाओं पर प्रतिबंध लगाने से आगे बढ़कर चिकित्सकों, सूक्ष्मजीवविज्ञानी (माइक्रोबॉयलाजिस्टों), औषधविज्ञानी (फॉर्माकोलिजस्टों) और सार्वजनिक स्वास्थ्य विशेषज्ञों के बीच आपसी सहयोग के माध्यम से उपचार (थेरेपी) को इष्टतम बनाने की दिशा में काम करना चाहिए। बताया गया कि यह पाठ्यक्रम एम्स और एस.ए.एस.पी.आइ के बीच एक सहयोगात्मक पहल का उद्देश्य विभिन्न स्वास्थ्य सेवा संस्थानों में एकीकृत एंटी माइक्रोबियल स्टीवर्डशिप की क्षमता को सुदृढ़ बनाना है। कार्यक्रम मे 24 संरचित मॉड्यूल शामिल है जो डायग्नोस्टिक-संक्रमण-एंटी माइक्रोबियल (डीआइए) मॉडल के अनुरूप है। पाठ्यक्रम का नेतृत्व कर रहे मेडिसिन विभाग के एडिशनल प्रो. डॉ. प्रसन कुमार पांडा ने बताया कि पाठ्यक्रम पूरा करने पर प्रतिभागियों को एक इ-प्रमाण पत्र दिया जायेगा। इसका समन्वय फार्माकोलॉजी, माइक्रो बायोलॉजी, कम्युनिटी मेडिसिन और ईएनटी विभागों के फैकल्टी द्वारा किया जा रहा है। बताया यह कोर्स एक समर्पित लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम lms.saspi.In से ऑनलाइन उपलब्ध है। हाइब्रिड मोड के माध्यम से सोसाइटी ऑफ एंटीमाइक्रोबियल स्टीवर्डशिप प्रेक्टिसेस के तत्वाधान मे राष्ट्रीय महत्व के संस्थानो से जुड़े 100 से अधिक स्वास्थ्य विशेषज्ञ कार्यक्रम में जुड़े थे। एम्स से चिकित्सा अधीक्षक प्रो. बी. सत्या श्री, डॉ. पीके पांडा, डॉ. भूपिंदर, डॉ. अमित कुमार, डॉ. महेंद्र, डॉ. अंबर, डॉ. वान्या, डॉ. मनीष, डॉ. बलराम, डॉ. माधुरिया, आकांक्षा रहे।

संवाद न्यूज

एएमआर के बढ़ते खतरे से निपटने पर की चर्चा

संवाद न्यूज एजेंसी

ऋषिकेश। एम्स में स्वास्थ्य कर्मियों और आम जनता के लिए एकीकृत एंटीमाइक्रोबियल स्टीवर्डशिप प्रथाओं पर एक निशुल्क फाउंडेशन राष्ट्रीय ई-कोर्स शुरू किया गया है। कार्यक्रम में एंटीमाइक्रोबियल रेजिस्टेंस (एएमआर) के बढ़ते वैश्विक खतरे से निपटने पर चर्चा की गई।

कार्यकारी निदेशक प्रो. मीनू सिंह ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। निदेशक ने एमडीआर, एक्स डीआर और पीडीआर जैसे रोगजनक एएमआर के बोझ से निपटने के लिए समन्वित और साक्ष्य आधारित दृष्टिकोणों की आवश्यकता पर जोर दिया। कहा कि भारत सहित वैश्विक स्वास्थ्य प्रणालियों के लिए एएमआर एक गंभीर खतरा बना हुआ है। उन्होंने कहा कि हमें केवल एंटीमाइक्रोबियल दवाओं पर प्रतिबंध लगाने से आगे बढ़कर चिकित्सकों,

एम्स में एएमआर के खतरे से निपटने की दिशा में चर्चा करते विशेषज्ञ। स्रोत : एम्स

सूक्ष्म जीवविज्ञानी, औषध विज्ञानी और सार्वजनिक स्वास्थ्य विशेषज्ञों के बीच आपसी सहयोग के माध्यम से उपचार को सर्वोत्तम बनाने की दिशा में काम करना चाहिए।

यह पाठ्यक्रम एम्स ऋषिकेश और एसएएसपीआइ के बीच एक सहयोगात्मक पहल का प्रमुख परिणाम है, जिसका उद्देश्य विभिन्न स्वास्थ्य सेवा संस्थानों म एकीकृत एंटीमाइक्रोबियल स्टीवर्डशिप क क्षमता को सुदृढ़ बनाना है।

मेडिसिन विभाग के प्रो. डॉ. प्रस कुमार पांडा ने बताया कि पाठ्यक्रम पू करने पर प्रतिभागियों को एक ई-प्रमाणप दिया जाएगा।

हिन्दुस्तान

एएमआर से निपटने को निःशुल्क ई-कोर्स शुरू

अच्छी खबर

- कोर्स से स्वास्थ्यकर्मियों और लोगों को मिलेगा लाभः प्रो: मीनू सिंह
- कोर्स पूरा करने पर प्रतिभागियों को मिलेगा ई-प्रमाण पत्र

ऋषिकेश, संवाददाता। एंटीमाइक्रोबियल रेजिस्टेंस (एएमआर) के बढ़ते वैश्विक खतरे से निपटने के लिए एम्स ऋषिकेश ने नई पहल की है। संस्थान ने स्वास्थ्य कर्मियों और आम जनता के लिए एकीकृत एंटीमाइक्रोबियल स्टीवर्डशिप (एएमआर) प्रथाओं पर निःशुल्क फाउंडेशन राष्ट्रीय ई-कोर्स शुरू किया है।

बुधवार को एम्स ऋषिकेश में इस ई-कोर्स का उद्घाटन कार्यकारी निदेशक प्रो. मीनू सिंह ने किया। उन्होंने एमडीआर, एक्सडीआर और पीडीआर जैसे रोगजनकों के बढ़ते बोझ से निपटने के लिए समन्वित और साक्ष्य-आधारित दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि एएमआर भारत सहित वैश्विक स्वास्थ्य प्रणालियों के लिए गंभीर चुनौती बना हुआ है। उन्होंने कहा कि केवल एंटीमाइक्रोबियल दवाओं पर प्रतिबंध पर्याप्त नहीं है, बल्कि चिकित्सकों, सूक्ष्मजीवविज्ञानी, औषधविज्ञानी और सार्वजनिक स्वास्थ्य विशेषज्ञों के बीच समन्वय से उपचार को बेहतर बनाना होगा। उन्होंने बताया कि यह पाठ्यक्रम एम्स ऋषिकेश और एसएएसपीआइ के सहयोग से विकसित किया गया है, जिसका उद्देश्य विभिन्न स्वास्थ्य संस्थानों में एंटीमाइक्रोबियल स्टीवर्डशिप की क्षमता को मजबूत करना है। यह ई-कोर्स स्वास्थ्य पेशेवरों और आम जनता के लिए तैयार किया गया है, जिसमें ज्ञान के साथ-साथ व्यावहारिक कौशल पर भी जोर दिया गया है। कोर्स में तर्कसंगत एंटीमाइक्रोबियल प्रिस्क्राइबिंग, डायग्नोस्टिक स्टीवर्डशिप, सही सैंपलिंग, संक्रमण की रोकथाम व नियंत्रण, अस्पताल की एंटीमाइक्रोबियल नीतियों का निर्माण व क्रियान्वयन, ऑडिट और फीडबैक तंत्र, दवाओं के उपयोग का मूल्यांकन और सामुदायिक स्तर पर स्टीवर्डशिप जैसे विषय शामिल हैं। कार्यक्रम में 24 संरचित मॉड्यूल शामिल हैं, जो डायग्नोस्टिक-इन्फेक्शन-एंटीमाइक्रोबियल (डीआईए) मॉडल पर आधारित हैं। मेडिसिन विभाग के एडिशनल प्रोफेसर डॉ. प्रसन कुमार पांडा ने बताया कि कोर्स पूरा करने पर प्रतिभागियों को ई-प्रमाण पत्र प्रदान किया जाएगा। मौके पर चिकित्सा अधीक्षक प्रो. बी. सत्या श्री सहित डॉ. पी.के. पांडा, डॉ. भूपिंदर मौजूद रहे।